

आईसीएफएआई विश्वविद्यालय ने मनाया दूसरा दीक्षांत समारोह

जनस्थारा समाचार

कुमारी। आईसीएपआई विधिविद्यालय कुमारी राजवर ने शनिवार को गढ़पुर के हाटल बेंचीलन कैशिल में अपना दूसरा दीक्षात मण्डपोह मापा। गढ़पाल रघुवा डेका कार्यक्रम में मुख्य अवधिपति हो। कार्यक्रम में कुमारी पति डॉ. डॉ. अरपी. कौशिक, पूर्व भास्तीप यांगदूत तुम्हारीनियन, बुलापति डॉ. डॉ. सत्य प्रकाश दुबे, डॉ. इन अकादमियम डॉ. के. किंशोर कुमार एवं रविनद्वारा डॉ. मनीष यामाचार्य, आईसीएपआई विधिविद्यालय खण्डपुर के शासी निकाय के सदस्य गणनार्थिक, खालक छात्रों एवं उनके मातृ-पितृजन्मितयां थे।

मुख्य अधिकारी ने आईसीएफएआई विधि विभाग लल्लूपुर के दूसरे दीवारी समाचार में उपस्थित होने का अवकाश मिलने पर आपात व्यक्त किया। इंजीनियरिंग, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला, वाणिज्य और कलन के बोर्ड में



गुणवत्ताएँ अनुचितान् और शिक्षा प्रदान करने के लिए भी रोपें डेका ने नए सारांशों को व्यवस्था दी। उन्होंने कहा कि बालसंक्षिप्त युवाओं में किसी अकिञ्चित कला प्रदर्शन हृषेशा अंजिं जान और वैशाल का कृष्णललाघुर्क उत्तरवाग करने की उम्मीद धन्ता पर निर्भर करता है। इस अवधि पर आधिकारिक रूप से विश्वविद्यालय रायपुर ने ऐसी, यहीं और डिस्ट्रिक्ट छात्रों को लगभग

400 डिग्री प्रदान करे, ज्ञाप्त हो विभिन्न विधायिकों के मेघांशु छात्रों को 21 स्थान पदक और 18 राजत पदक प्रदान किए। विजेताओं वार्ष 2023-24 में खातक किया है। अपने सबोधन में कूलपात्र द्वारा सहयोगकारी दुर्लभ ने सभी सम्मानित गणमान्य और्हायियों को उनकी उपराख्यान के लिए छात्रिक घटनवाद दिया। इसके अलावा, उन्होंने स्थापना के बाद से विश्वविद्यालय की प्रगति के बारे में विस्तृत से जानकारी दी। विश्वविद्यालय के द्वीन अकादमिक द्वा. के, विशांग ने उन्होंने छात्रों को उनकी पेशेवर और उन भूमिकाओं के लिए अपनी प्रतीकृति दियी बनाया। रखने वाले वीर प्रतिज्ञा लेने की बात। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के नियम द्वा. परीक्षा उपायाम ने कार्यक्रम में विभिन्न समस्त गणमान्य और्हायियों को उपराख्यान दिया और सभी आतक छात्रों को भवित्व के प्रयासों के लिए बधाई दी।

ICFAI University Raipur Hosts 2nd Convocation Ceremony

Want iPhone? Get it

KP4: University Police celebrated its second promotion ceremony today. On this special occasion, the Associate Commissioner of Dharmapuri, Raman Chellai graced the event as the Chief Guest. The ceremony was an opportunity to honor the individualistic qualities of academic excellence, integrity, and result while preserving the institution's tradition and dedication to its mission.

The good event was attended by Professor Dr. H. P. Kaulchand Chatterjee and former Indian Ambassador to Yugoslavia Professor Dr. J. S. Basu Prasad Debey.

manus, bustrophedon. Registered members of the governing body, senior digitaria, graduating seniors, and their parents.

Addressees by the Chair Guest

In this address, Honorable Governor Powers - Dated September 16, graduate for having part of the eightieth day for the University. He enumerated the



EDPA - University Region was established under Section 92(3) of the *Charter of the University*. The University's *Code of Behaviour and Operations Act 2005* is designed to promote high-quality education and research to the benefit of its students. The policies and technology, and processes set, and live.

Chair, Guest added, ED-University Partners is one of the most straightforward illustrations in the source, because for providing quality education across various disciplines, the institution has achieved its current status. Another recommended title was that students can contribute in improving and other areas at the university. He also explained the basic requirements for their contribution and deduction.

part in their children's education processes. He maintained that individual success in the classroom depends on the skillful use of knowledge and skills they have acquired. He encouraged parents to develop a diagnostic-therapeutic process. He stated, "Evaluation and significance only come in at the light time and at the light of day. The process of knowledge and personal growth will also bring positive change to society at the highest level."

and appropriate and compassionate guidance, were guaranteed in the calendar years 2020-2021 and 2021-2022. 21 gold medals and 18 silver medals were presented to students who demonstrated exceptional performance.

Speech by the Vice-Chancellor
During the convocation ceremony, Professor (Dr.) Basu Prabuddha Datta, the Vice-Chancellor, addressed the graduands at the Convocation Hall of the University on 11 November 1998. The following is his speech as far as practicable.
He stated that the graduations are not merely a formal but also a commemoration and acknowledgment of the institution. He inspired the graduands to contribute to the world's development through innovation and service. He said, "As our education system undergoes a major transformation, we need to go through an academic journey that also takes the beginning of new responsibilities. It is your duty to use your education for the betterment of society and the nation".

Congratulations and Best Wishes.

obtain their admissions are used in the graduating students to expand the prestige of their degrees and to make sure that admissions are as judicious as possible. It is important that the students should know they are based admissions of the institution, and their success will enhance the university's reputation. At the end of the program, Registered Dr. Marichamy ammal is a role model who expressed gratitude to all the participants for making the event successful and for their support and guidance for today's admissions.

The program concluded with the presentation of monetary cash-prizes of participants by Professors Duleep De Silva and Chandrika Professor Dr. T. P. Fernando. The lateral arrangement was followed, involving the end of the seminar.

सीखने के लिए सदैव सतत् इच्छा होनी चाहिए : रमेन डेका

प्रौद्योगिकी विभाग की अधिकारी ने इसका उत्तर दिया है कि विभागीय विवरणों को सम्पूर्ण रूप से 22 अक्टूबर को प्राप्त किया जाएगा और 23 अक्टूबर को इसका उत्तर दिया जाएगा।



इस जाने याने विद्यार्थीरों में लकड़ाने को अधिक समय है। एक दृष्टि का उपर्युक्त

यहाँ ही रहे हैं विं नॉर्थ ग्राहमसन एवं उनके साथी बेटे लो रहे हैं।

तर तो यादों से ज्ञान एवं विद्या की विद्युत है। यह विद्युत यादों का अस्ति-तथा-प्रतिष्ठान है।

आईसीएफएआई विवि ने मनाया दूसरा दीक्षांत समारोह

‘हनीमुख’ संसाधना

बुद्धीमुद्रा २२ लिखना। अप्रतीक्षित व्यापारी
विद्युतिकालय बुद्धीमुद्रा द्वारा ने सहित भारी
वरपूर के टोला बेंचलोन जैफिल्ड में अपना
पुल दीर्घी समाप्त करना पाया। बड़ी सामग्री के
इन्हें लागत द्वारा एक व्यापक रूप में पुष्ट बनियाँ
के हाथ में उत्पन्न हुए।

कार्यक्रम में कृत्यालयी प्री. डॉ. नार. पी. कोर्टिस, दूसरे भागीय संसदीय कृत्यालयालय, कृत्यालयी प्री. डॉ. डॉ. संसदीय प्रकाश द्वारे, दोनों अवश्यकतामुख्य विभागों के बहुत अधिकारी प्रवर्तनों की, नमीनी उपाध्यक्ष एवं उपर्युक्त हमारी विश्वविद्यालय राष्ट्रपति के दास्ते विभागों के सदस्य एवं सचिवों नामांकित, ज्ञानकालीन एवं उत्कृष्ट व्यक्ति-सिवा के माध्यम संप्रेषित हैं।

मुख्य अधिकारी ने अपने संस्थापन के अधिकारीकरण के लिए विवाहित प्रधानपत्र के दूसरे दो वर्षों सहरावो में उपसंस्था लोगों का अध्ययन प्रिलिंग या आधार ज्ञान किया। इसके अन्तर्गत, शिक्षा, प्रौद्योगिकी, कला, विचारित और कानून में वृद्धिकार्य अनुसंधान और विद्या के बीच में विनियोग होने की समीक्षा की गई।

वैधिक वायर में सकलता प्राप्त की है। इनमें नह कि अधिकारीप्रबुद्ध वहीं वैधिकतावाले पृष्ठ देख के द्वारा संभवतामें से एक ही जो कहीं वहीं विषय के वैधिक व्यापारीमें पुरुष वाले पृष्ठ विषय व्यापार करनेके लिए बना जाता है। इनमें कह कि सम्भालने के बाहर लोडिंग्समें और चुनौतियों के बावजूद उन्हीं व्यक्तियों को प्राप्त करने में सम्पन्न नहीं हैं, विस्तृत पोषण सम्बन्ध में ही ऐसा गुणालया के द्विनियांत्रित विषयों और अन्य गुणकमें 400 से अधिक छह-एक्सप्रेस नामित है।

मुख्य अधिकारी ने कामों के लिए दूसरकारी उपर्याप्ति के संबंध में उत्तर भाषा-लिख के प्रयोगशास्त्र का समर्थन के लिए भी वजह दी। उक्त नियम का लिखा जाना कामों के लिए दूसरकारी में किया जाना का प्रयोगशास्त्र की अधिकारी द्वारा और चौदहवीं शताब्दी के अन्तर्गत लिखा जाना का अनुसारण पूर्ण करना चाहिए कि उक्त नियम का समर्थन पर विरोध कराया गया है। उक्त नियम कामों से संबंधित द्वारा प्रत्यक्ष किए एवं सभी अधिकारी वा धारा उपर्याप्त कामों का लिखा रखिया और उक्त का समर्थन पूर्ण अन्तिम रूप में होना चाहिए ताकि उक्त का अन्तर्गत लिखा जाना का अनुसारण पूर्ण करना चाहिए ताकि उक्त का समर्थन किया जाए। और उक्त का समर्थन करने के लिए उक्त का अनुसारण पूर्ण करना चाहिए ताकि उक्त का समर्थन किया जाए।



वर्ष मात्रावली है।

विस्तार से अलगती ही। उन्होंने कहा कि मात्रावालों को परिणय कर आकर ऐसे और नववाचों के गुण गुप्त की तौर पर बढ़ाए और परिणाम तभी के लिया अवशिष्ट विमोचनिया लेंगी जाती ही क्योंकि वे कल्प एवं जलों का इस्तम नहीं है वास्तव मन्दिरों के माध्यमावाहक और गांधी है। यिथां विवाहालय के द्वारा विवाह मन्दिर तथा के लिये बुजुर्ग ने उन्होंने जाहों तक उनके लिये अपनी व्यापक भूमिका लेने के लिये अपनी इच्छिता शुरू की बनाए रखने की गोपनीयता लेने की बात कही।

सीखना एक अनंत प्रक्रिया: राज्यपाल

आईसीएफएआई विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में शामिल हुए रमेन डेका

कृष्णगी, 21 दिसंबर. (नेपालमन्त्र)।
अमरनीतिएकाउँ भिविक्षालाल बृहत्तरी
प्रयोग ने दानिकार को प्रयोग के हाइट
बोल्टले फैसिल में दाना दाना बैची
दानाहरू बोल्ट। क्लीविलालके दानाहरू दोनों
इकाएककम में मुख्य अभिविक्षा के रूप में
उत्तरित गए।

वाराणसीमें भूमध्यपति हो, वह आरपी, कौलिहक, पूर्ण भारतीय दाकपत्र तुम्हेमेसिलव, रुद्रगंगी हो, वह साल इकलौ दुखे, दीन अवकाशमित्र हो, जो चिकित्सों चुक्काए पर्याप्त बिहारीदार हो, मनोष दण्डाध्याक्ष, माझेसी बिहारी विभवितालापय दक्षपत्र ज्ञेय हो, दासी विवाह के साथसाथ गणमान्य गणराज्य, उमड़न दासी एवं उनके मासा-फिल के साथ उपस्थित हो।

बहुत अधिक ही उपरोक्त स्थेष्ठान में आईसीएपीआई विश्वविद्यालय बदलौर के दूसरे दौसठे समारोह में उनस्मिता हीरे का अवश्यक चिनाने पर आधार लगकर किया। उड़ीसारिनगर, दिल्ली, एंट्रोपोलोजी, बाल, विश्वविद्यालय और बदलौर के दोनों में गणकात्मक अनुसंधान और विज्ञान विभाग बदलौर के लिए और रमेश टंडुका ने नए खालीलों को जारी की, जिनमें अपनी काल्पनि महाविद्यालय दृष्टि में उपरोक्त स्थेष्ठान की उन्होंने अपने बड़ा काम की आईमार्गपत्रकार्यालय विभाग द्वारा किया गया अनुसंधान में से एक है जो उन्हें बड़ी से वित्ती के विविध विभागों में दृष्टिकोण लिया प्रदान करने



के लिए जारी जाता है। उन्होंने कहा कि मंगलवास ने कई कार्यपालकों और पुरुषों के बावजूद अपनी बोधान विज्ञ जें छाप करते हैं। उनका सामना लाइट है, जिसमें बोधान विज्ञ जें दर्शन करने वाले हैं और प्रभागात् के दैविकरणीय विषयों और ज्ञान पाठ्यक्रमों में 4000 से अधिक लार्ज-डाक्टरेशन नामांकित हैं।

मूल अधिकार के वस्त्रों के सेवायिक प्रयासों के संबंध में उनके बताएँ-पिता के प्रतिवर्द्धक सम्बन्ध के लिए भी बहुत ही दूर उन्हें बताएँ कि वास्तविक दृष्टियाँ नहीं किया जाता कि प्रदर्शन होने की अवधि और वर्णन का कठोरतम् पृष्ठक लिखणे को उनकी व्यक्तिपूर्णता पर धिरें करता है। उन्होंने यहाँ लाखों से संख्याएँ द्वारा प्रदर्शन किया गया

साथी अवसरी का नाम डडने का अप्रिय
किया और उहा कि भीखना पृष्ठ अवश्य
प्रतिक्रिया है, और जब वे अपेक्षा जन को नाम
करने और उसी नाम के लिए बोलना चाहते हैं
अब उम्मेद रक्षावालक परिवर्ती होने का
उत्तम समय हो जाता है जो कोई क्षमा गोदान
है यह महाविजय है।

उसमें सभी व्यापकों से सहज बैठक उपर्युक्त किया जाए, अपनी व्यवस्थाओं को उद्घोषित करने और सम्बलान प्राप्त करने मूल लोधि के लिए प्रयत्न करने वा अपना चिना।

की, जहां ही विभिन्न विधायिकों के फैलावाले उनमें से 21 संसदीय प्रदेश और 18 राजनीतिक प्रदानाएँ दिए, जिनमें से वर्ष 2023-24 में वित्तालय चिन्हां है। अपने गोबिंदपुर में बृहत्परिषद् द्वारा इस प्रदानाएँ में सभी सामाजिक व्यवस्थाओं और समाजिक सेवाओं को उनको गोपनीयताएँ दिलावानी के द्वारा दाखिल प्रनयनाद दिया। इसके अलावा, उन्होंने संसदीय कानून से विभिन्न सामाजिक पारिवारिक व्यवस्थाएँ को प्रदान करने के बारे में विस्तृत से जनविदारण की। उन्होंने कहा कि प्राचारकोटी की विवरण को अवधारणा देने की वजह से जनविदारण के साथ यह को-सेवा करने से परिवर्तित होने के लिए अवशिष्ट विस्मयदायिता लोगों तकी है और विवरण के बोलने पूर्व व्याप्ति का विस्तृत विवरण ही विविध संसदीय कानून के विवादों को उत्तीर्ण करने के लिए जरूरी है।

वर्षोंतक जैसा भाग में विश्वविद्यालय के विभिन्न दृष्टि अधिकारी ने वार्षिक सम्मेलन में उपस्थिति सम्पादन ग्रन्थालय अधिकारियों का उन्नतवाल दिया और सभी खालीक छात्रों का उनके विविध के प्रयोगों के लिए बहुत ही वार्षिक सम्मेलन के अंदर में सभी अधिकारियों और स्फूर्ति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। विश्वविद्यालय के वायाक वार्षिक सम्मेलन का उपायकारी चुनून।

आईसीएफएआई विश्वविद्यालय ने मनाया अपना दूसरा दीक्षांत समारोह

कुम्हारी (कुबेर भूमि)।

आईसीएफएआई विश्वविद्यालय कुम्हारी रायपुर ने झनिवार को रायपुर के होटल बेबीलोन कैपिटल में अपना दूसरा दीक्षांत समारोह मनाया। छत्तीसगढ़ के माननीय राज्यपाल रमेश डेका कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. डॉ. आर.पी. कौशिक, पूर्व भारतीय राजदूत तुर्कमेनिस्तान, कुलपति प्रो. डॉ. सत्य प्रकाश दुबे, डीन अकादमिक्स डॉ. के. किशोर कुमार एवं रजिस्ट्रार डॉ. मनीष उपाध्याय, आईसीएफएआई विश्वविद्यालय रायपुर के शासी निकाय के सदस्य गणमान्य नागरिक, स्नातक छात्रों एवं उनके माता-पिता के साथ उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में आईसीएफएआई विश्वविद्यालय रायपुर के दूसरे दीक्षांत समारोह में उपस्थित होने का अवसर प्रदान पर आभार व्यक्त किया। इनीनियरिंग, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, कला, वाणिज्य और कानून के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान और शिक्षा प्रदान करने के लिए श्री रमेश डेका ने नए स्नातकों को बधाई दी, उन्होंने अपनी कही मेहनत और दृढ़ता से अपनी शैक्षणिक खोज में सफलता प्राप्त की है उन्होंने आगे कहा कि आईसीएफएआई विश्वविद्यालय रायपुर देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में से एक है जो कई वर्षों से शिक्षा के विभिन्न शाखाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए जाना जाता है। उन्होंने कहा कि संस्थान ने कई कठिनाइयों और चुनौतियों के बावजूद अपनी वर्तमान स्थिति को प्राप्त करने में सफलता पाई है,



जिसमें योग्य संकाय मदस्य हैं और मुख्यधारा के इंजीनियरिंग विषयों और अन्य पाठ्यक्रमों में 400 से अधिक छात्र-छात्राएं नामांकित हैं। मुख्य अतिथि ने छात्रों के शैक्षणिक प्रयासों के संबंध में उनके माता-पिता के प्रेरणादायक समर्थन के लिए भी बधाई दी। उन्होंने कहा कि वास्तविक दुनिया में किसी व्यक्ति का प्रदर्शन हमेशा अर्जित ज्ञान और कौशल का कुशलतापूर्वक उपयोग करने की उसकी क्षमता पर निर्भर करता है। उन्होंने युवा छात्रों से संस्थान द्वारा प्रदान किए गए सभी अवसरों का लाभ उठाने का आग्रह किया और कहा कि सीखना एक अनंत प्रक्रिया है, और जब वे अपने ज्ञान को लागू करने और आगे बढ़ने के लिए योगदान देने और हमेशा रचनात्मक परिवर्तन लाने का अवसर प्राप्त करते हैं तो कोई क्या सीखता है वह महत्वपूर्ण है। उन्होंने सभी स्नातकों से समाज के उल्थान के लिए काम करने, अपनी मान्यताओं को मजबूत करने और सफलता प्राप्त करने मूल शोध के लिए प्रयास करने का आग्रह किया। इस अवसर पर आईसीएफएआई विश्वविद्यालय रायपुर ने पीजी, यूजी और डिप्लोमा छात्रों को लगभग 400 डिग्री प्रदान की, साथ ही विभिन्न विभागों के

मेधावी छात्रों को 21 स्वर्ण पदक और 18 रजत पदक प्रदान किए, जिन्होंने वर्ष 2023-24 में स्नातक किया है। अपने संबोधन में कुलपति डॉ. सत्य प्रकाश दुबे ने सभी सम्मानित गणमान्य अतिथियों को उनकी गरिमामयी उपस्थिति के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया। इसके अलावा, उन्होंने स्थापना के बाद से विश्वविद्यालय की प्रगति के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि स्नातकों को भविष्य को आकार देने और नवाचारों के साथ राष्ट्र की सेवा करने और परिवर्तन लाने के लिए अतिरिक्त जिम्मेदारियां सीधी जाती हैं व्यक्तिके बीच के बीच पूर्व छात्रों का हिस्सा नहीं है बल्कि संस्थान के मशालवाहक और राजदूत हैं। विश्वविद्यालय के डीन अकादमिक्स डॉ. के. किशोर कुमार ने उत्तीर्ण छात्रों को उनकी पेशेवर और राष्ट्रीय भूमिकाओं के लिए अपनी प्रतिष्ठित डिग्री को बनाए रखने की गंभीर प्रतिज्ञा लेने की बात कही कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. मनीष उपाध्याय ने कार्यक्रम में उपस्थित समस्त गणमान्य अतिथियों को धन्यवाद दिया और सभी स्नातक छात्रों को उनकी भविष्य के प्रयासों के लिए बधाई दी।